Vol.7 May 2014 No.11
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

युवको !

–श्री रामदेव प्रसाद सिंह 'देव'

युवको ! रुको !
बिना सोचे समझे
भोगवाद की ओर न झुको।
यह योग भूमि है
योगे वर का दे ा है
'युक्ताहार विहारस्य...'
यहाँ सर्व ाास्त्रमयी
श्रीमद्भगवद्गीता का उपदे ा है।
तुम्हारी आर्ष परम्परा है
यह अवतार की वसुन्धरा है
तुम सब अमत पुत्र हो
मानवीय आद ार्ों के
मान्य मंगलसूत्र हो।
तुम राम हो, कृष्ण हो,
बुद्ध, महावीर हो,
कपिल हो, कणाद हो,
रामानन्द हो, आजाद हो।
अमर कुँवर वीर हो
ांकर हो, रामानुज हो,
राणा रणधीर हो
तुलसी, रविदास हो,
समर्थ रामदास हो
रहीम हो, रसखान हो।
जन–जन के प्राण हो
घर–घर की ाान हो
मानवता का वरदान हो
नवयुग निर्माण हो
अग्रिम अभियान हो।
तुम्हारी आचार संहिता
निखिल लोकाद ार्ों का
ा वत आधार है
तुम पर आस लगाए
आज सारा संसार है।
तुम्हारा वैदिक वाङ्मय
संपूर्ण ज्ञान–विज्ञान का
अप्रतिम अक्षय कोष है
जहाँ सुख है ाान्ति है
ाील है संतोष है।
तुम भूलकर भी भोगवादी,
बुद्धिवादी, चार्वाकी चिन्तन के
चक्कर में आकर
देव–दुर्लभ तन पाकर
कामिनी कंचन के ऊपर
कदापि न बिको
भोगवाद की ओर न झुको
ाुभ चिंतन न चूको।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:

1. Shri. S. K. Chawla, C2B/27A, Janakpuri, New Delhi-58 Rs.500/-
2. Shri. S.K. Madan, C2/172, Janakpuri, New Delhi-58 Rs. 500/-

Doundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

Brahmarpan May 2014 Vol. 7 No.11
वैशाख-ज्येष्ठ 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. युवको ! 2
–श्री रामदेवप्रसाद सिंह 'देव'
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्शन 7
–श्री रामदेव प्रसाद सिंह 'देव'
4. लाला लाजपतराय की साहित्य साधना
–डॉ. भवानीलाल भारतीय 8
5. धर्म राष्ट्रीय एकता का विरोधी नहीं
–महात्मा हंसराज 11
6. स्वातंत्र्य वीर सावरकर की स्मृति में नमन 14
–पण्डिता राके शरानी
7. वामपंथी इतिहासकारों द्वारा इतिहास का विकृतीकरण 18
–अश्विनी कुमार
8. अदालती फैसलों पर सियासत का खेल
–सुधांशु रंजन 20
9. मदर टेरेसा के जीवन का अज्ञात पक्ष
–हरिकृष्ण निगम 23
10. मदर और मीडिया 27
11. चाणक्य की त्याग भावना 28
–रश्मि
12. Puncture your Ego 32
-Rajan Suri
13. Cinnamon and Honey-II 33

संपादकीय

सु ाासन के लिए ाासक चरित्रवान् हो

'प्राचीनकाल में भारतवर्ष (जिसे ब्रह्मावर्त कहते थे) के लोगों के चरित्र इतने महान् थे कि वि वभर के लोग यहाँ आकर चरित्र की ि ाक्षा ग्रहण करते थे। तभी कहा गया था कि–

एतद्दे ाप्रसूतस्य सका ाादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं ि ाक्षेरन् पथिव्यां सर्वमानवाः।।

आज हमने अपने पूर्वजों की विरासत को खो दिया और अब हिन्दुस्तान अपने कदाचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार आदि कुकृत्यों के लिए दुनिया–भर में जाना जाता है। इसका कारण है संविधान में दे ा को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित करना। हमारी सरकार ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सदाचार/नैतिकता को भी धर्म के अन्तर्गत समझ कर इसे ि ाक्षा के क्षेत्र से बाहर कर दिया। एक कहावत है– – "धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, और यदि चरित्र गया तो समझो कि सब कुछ चला गया।" हाल ही में दिल्ली के प्रतिष्ठित मॉडल स्कूल में छात्रों और छात्राओं पर परस्पर अ ाि ष्ट दुराचारपूर्ण व्यवहार को देखकर ार्म से सिर झुक जाता है। इसी तरह मुम्बई के छात्र–छात्राओं द्वारा लोनावणा में एक रेव पार्टी में अभद्र नत्य, मदिरापान, हुक्के का सेवन और न ाीली दवाओं के सेवन की घटना का खुलासा हुआ। पुलिस ने स्थानीय लोगों की ि ाकायत पर 45–46 छात्र–छात्राओं को गिरफ्तार किया। ऐसा युवा वर्ग दे ा पर कलंक है।

आज समाज में, वि ोषतः, युवावर्ग में बढ़ती हुई आचारहीनता को देखकर लोग पाठ्यक्रमों में नैतिक ि ाक्षा पर बल देने

का आग्रह करने लगे हैं। हमारी ि ाक्षा का लक्ष्य बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना है। इसलिए विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में आरंभ से नैतिक ि ाक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए। सन् 1947 में दे ा आजाद हुआ। उस समय निजी विद्यालयों में धर्मी ाक्षा भी एक विषय हुआ करता था। हमारी सरकार ने धर्मनिरपेक्षता (सेक्युलरिज़्म) के नाम पर धर्मी ाक्षा को पाठ्यक्रमों से हटा दिया अर्थात् अब बच्चों को चरित्र ि ाक्षा या नैतिक ि ाक्षा से वंचित कर दिया गया। यहीं से आरंभ हुआ नई पीढ़ी के चरित्र का पतन।

वस्तुतः बच्चों के चरित्र निर्माण का आरंभ घर से ही होता है। इसका सबसे बड़ा दायित्व माता-पिता का है। उसके बाद गुरु का कर्तव्य विद्यालयों में ाुरु होता है। गुरु को आचार्य कहा जाता था जिसका अर्थ है जो ि ाष्यों को आचारवान् बनाता है। ये तीनों सम्मिलित रूप से बच्चों के चरित्र के निर्माता हैं। आज माता-पिता अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें बच्चों के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता और जो माता पिता संपन्न है वे अपने धंधे से बचे समय का उपयोग क्लब आदि में करते हैं। वे बच्चों को क्रेच (ि ा ाु गहों) या नौकरों के पास छोड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में उपेक्षित बच्चों का चरित्र निर्माण कैसे संभव होगा, यह विचारणीय है। इसके अतिरिक्त बच्चों के ाारीरिक और मानसिक विकास में भी माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों के मन पर परिवार के सदस्यों के विचारों, व्यवहार और आचरण का स्थायी प्रभाव पड़ता है। बच्चे माता-पिता और परिवारजनों के आचरण और व्यवहार से सीखते हैं। यदि माता-पिता सत्य और न्यायपूर्ण आचरण नहीं करते तथा छल-कपट, असत्य, अन्याय, वि वासघात का सहारा लेते हैं तो उसका उनके मन पर नकारात्मक प्रभाव

पड़ता है।

विद्यार्थी प्रायः शिक्षकों को अपना आदर्श (रोल मॉडल) मानते हैं और उनका अनुकरण करते हैं। उनसे ही वे अनुशासन का पाठ पढ़ते हैं। परन्तु जो शिक्षक इस पवित्र व्यवसाय को केवल आजीविका कमाने का साधन मानते हैं वे अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार नहीं हैं। वे अपने प्रमुख दायित्व की उपेक्षा कर प्राइवेट ट्यूशन, कोचिंग क्लासेस आदि में संलग्न रहते हैं।

जब तक हमारे देश में वर्णाश्रम व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रही, देशवासियों का चरित्र संसार के सामने आदर्श बना रहा, जब से प्राचीन परंपराओं का लोप हो गया देश धीरे-धीरे चरित्रहीनता के गर्त में गिरता गया।

10 सितम्बर 2000 को पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने न्यूयार्क के स्टेटन द्वीप में कहा था कि उनका लक्ष्य भारत को संसार का सबसे उन्नत और चरित्रवान् देश बनाना है। हम आशा कर सकते हैं ऐसा क्षण देर-सवेर अवश्य आएगा जब भारत अपनी वर्तमान दुरवस्था से निकल कर चारित्रिक दृष्टि से भी उन्नत देश बनेगा।

इस दिशा में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने रामकृष्ण मिशन के सहयोग से तीन वर्ष का नैतिक मूल्यों के संवर्धन के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करने की योजना बनाई है। इस कार्यक्रम में 45 मिनट के 48 सत्र होंगे। प्रत्येक वर्ग में 16 मॉड्यूल रखे जाएँगे। इसके लिए संबंधित शिक्षकों को रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा।

देश में युवको के चारित्रिक उत्थान के लिए व्यापक स्तर पर इस तरह के कार्यक्रमों की आवश्यकता है। इसमें सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं के योगदान की आवश्यकता है।

संपादक

सांख्य द र्शन (अध्याय-1, सूत्र-77)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पिछले सूत्र में वादी ने मूल उपादान (मूल प्रकृति) की असिद्धि के संबंध में कुछ ांकाएँ की थीं। अगले सूत्र में सूत्रकार ने उन ांकाओं का समाधान प्रस्तुत किया है, सूत्र है-

तथाप्येकतरदष्ट्या एकतरसिद्धेः।।77।।

अर्थ - (तथापि) तब भी (एकतरदष्टया) कार्यज्ञान द्वारा (एकतरसिद्धेः) कारण की सिद्धि से (अपलापः न) प्रकृति की सिद्धि से इन्कार नहीं किया जा सकता अर्थात् प्रकृति का अस्तित्व ही सिद्ध होता है।

भावार्थ - इन पूर्वोक्त आ ांकाओं के होने पर भी सभी वादियों ने कार्यकारणभाव को स्वीकार किया है। इसलिए इस सिद्धान्त को नि चय से स्वीकार किया जाएगा कि एकतर (कार्य) के देखे जाने से एकतर (कारण) की सिद्धि होती है। अतः कार्य के देखे जाने से कारण के अस्तित्व का अपलाप या निषेध नहीं किया जा सकता। प्रत्येक वादी ने इस तथ्य को निर्भ्रान्त रूप से माना है कि कार्यमात्र का कोई मूल कारण अव य होता है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

- अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।
- अध्ययन उल्लास और योग्यता का कारण बनता है।
- ज्ञान में पूँजी लगाने से सर्वाधिक ब्याज मिलता है।
- जो अवसर को समय पर पकड़ ले वही सफल होता है।
- असंभव एक ाब्द है जो मूर्खों के ाब्दको ा में पाया जाता है। आत्मवि वास सफलता का प्रथम रहस्य है।

लाला लाजपतराय की साहित्य साधना

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

विगतकाल के नेताओं की एक वि ोषता यह थी कि वे वाणी के साथ–साथ लेखनी के भी धनी होते थे। लोकमान्य तिलक हों या भारत केसरी लाला लाजपतराय, महात्मा गाँधी हों या पं. जवाहरलाल नेहरु, ये सब उत्कृष्ट कोटि के इतिहासज्ञ, लेखक तथा साहित्यकारों की श्रेणी में आते हैं। तिलक ने मांडले (बर्मा) की जेल में रहते गीता का प्रसिद्ध भाष्य 'कर्मयोगी रहस्य' लिखा तो पं. नेहरु ने 1942 में अहमदाबाद के कारागार में विख्यात इतिहासग्रन्थ 'भारत की कहानी' (डिस्कवरी ऑफ इण्डिया) लिखी। लाल बाल पाल की त्रिपुटी के प्रमुख लाला लाजपतराय भी एक सिद्धहस्त लेखक थे। उर्दू तथा अंग्रेजी पर उनका असाधारण अधिकार था। यद्यपि उनका संस्कृत ज्ञान सीमित था, तथापि स्वाध्याय के बल पर उन्होंने वेद, उपनिषद् तथा गीता जैसे दा र्निक ग्रन्थों के सार सर्वस्व को समझ लिया था।

लालाजी के लेखन का प्रिय विषय था महापुरुषों के जीवन चरितों का लेखन। अपने विस्तत अध्ययन के बल पर उन्होंने न केवल भारत के विगत दे ाभक्तों, ाासकों तथा महापुरुषों के जीवन चरित लिखे अपितु इटली को स्वाध ीनता दिलाने वाले वीसेप मैजिनी तथा गैरीवाल्डी के वि ाद जीवन चरित भी लिखे। ब्रिटि ा ाासन को इन ग्रन्थों के प्रका ान से असहजता महसूस हुई। उसका मानना था कि इटली की आज़ादी के लिए सर्वस्व न्यौच्छावर करने वाले इन सर्वस्व त्यागी राष्ट्रभक्त महापुरुषों से भारतवासी भी प्रेरणा लेंगे और इससे उनकी आज़ादी की लड़ाई में उग्रता ही आयेगी। फलतः उन्होंने इन दोनों महापुरुषों की जीवनी पर

प्रतिबन्ध लगा दिया।

1947 में दे ा के स्वतंत्र हो जाने पर लालाजी की इन जब्त ुदा पुस्तकों को भारत सरकार के प्रका ान विभाग ने दुबारा प्रका ित किया।

लालाजी ने महाभारत तथा पुराणों का वि ाद विवरण लिखा। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द का जीवनचरित लिखने के साथ-साथ अंग्रेजी में उन्होंने 'दि आर्यसमाज' नामक वि ाद ग्रन्थ लिखा जिसमें इस संस्था की स्थापना की वि ाद पष्ठभूमि का आकलन करने के प चात् पंजाब में आर्यसमाज के विस्तार और प्रगति तथा ऋषि दयानन्द की स्मति में लाहौर में दयानन्द वैदिक कालेज के खोले जाने की प्रामाणिक जानकारी दी गई है। कहना नहीं होगा कि उस प्रारम्भिक युग में आर्यसमाज को गति देने में खुद लालाजी का बहुत बड़ा हाथ था। अतः उन्नीसवीं ाताब्दी में आर्यसमाज की राष्ट्रव्यापी प्रगति और विस्तार का यह ग्रन्थ एक प्रामाणिक दस्तावेज है। पुस्तक को इंग्लैण्ड की लाँगमैन ग्रीन एण्ड कम्पनी ने 1915 में प्रका ित किया।

लालाजी के सहपाठी और सहकर्मी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का अल्प अवस्था में ही निधन हो गया था। लालाजी विद्यार्थी जी की विद्वता तथा योग्यता से भलीभाँति परिचित थे। उन्होंने पं. गुरुदत्त का प्रामाणिक जीवन चरित 1891 में प्रका ित किया। आ चर्य की बात है कि संस्कृत का नाममात्र का ज्ञान रखने वाले लालाजी ने गुरुदत्त के किये उपनिषदों के व्याख्यानों की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए अन्य पा चात्य उपनिषद् व्याख्याकारों से उनकी श्रेष्ठता सिद्ध की है। सम्राट् अ ोक तथा मराठा वीर िावाजी के जीवनचरित भी उन्होंने लिखे थे।

मुख्यतः राजनीतिज्ञ होने के कारण उन्होंने सामयिक राजनीति का उल्लेख अपने 'यंग इण्डिया' नामक निबंध संग्रह में किया है। जब एक बदनाम अमेरिकी महिला पत्रकार मिस कैथराइन मेयो ने भारत की सभ्यता, संस्कृति और जीवन पद्धति को दूषित और लांछित करने की दष्टि से 'मदर इण्डिया' नामक पुस्तक लिखी तो महात्मा गाँधी ने उसे गंदी मोरी में झाँकना बताया, परन्तु लालाजी ने 'मदर इण्डिया' का सटीक उत्तर 'अनहैप्पी इण्डिया' 'दुखी भारत'–(प्रका ाक इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद) लिख कर दिया। इस क्रम में कालान्तर में रंगा अय्यर की अंग्रेजी पुस्तक 'फादर इण्डिया' तथा श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल की लिखी 'अमेरिकन लेडी' और 'भारतमाता' इसी क्रम में लिखी गईं। लालाजी ने गीता के उपदे ाों पर एक विवेचनात्मक ग्रन्थ लिखा था और अछूत समस्या पर 'डिप्रेस्ड कास्ट्स एण्ड अवर ड्यूटी' ाीर्षक विचारोत्तेजक पुस्तक लिखी। आ चर्य होता है कि स्वदे ा की आज़ादी का यह वीर सिपाही एक ओर विदे ाी हुकूमत के उन्मूलन के लिए संघर्ष करता है, साइमन कमी ान के विरोध में जुलूस का नेतत्व कर अपनी छाती पर लाठियों का प्रहार सहन करता है वही समय निकालकर हजारों पष्ठों का साहित्य भी लिखता है। उन्होंने अपनी आत्मकथा मांडले जेल में लिखी थी जिसमें उनके सार्वजनिक जीवन की विस्तत कहानी है। लालाजी की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का सम्पादन ग्यारह खण्डों में इन पंक्तियों के लेखक ने किया है।

315, ांकर कालोनी, श्रीगंगानगर

धर्म राष्ट्रीय एकता का विरोधी नहीं

–महात्मा हंसराज

प्राचीन आर्यावर्त में धर्म सबसे बड़ा बल समझा जाता था। आर्यों के समाज में जो पुरुष बड़ी आयुवाला होता था, वह मान के योग्य था। धनवान् भी सत्कार के योग्य समझा जाता था, क्योंकि वह अपने धन की ाक्ति से दूसरों पर अपना प्रभाव बिठला सकता था। इससे भी बढ़कर बाहुबल अथवा क्षात्रबल समझा जाता था, क्योंकि जिसके हाथ में लाठी है वह धनवानों को भी हाँककर अपने आगे लगा सकता है। क्षात्र ाक्ति भी विद्या के बल के आगे मात हो जाती है, नष्ट हो जाती है। जब तक इसको विद्या के प्रका ा का सहारा न हो, यह अन्ध ाक्ति है तथा ीघ्र नष्ट हो जाती है। विचार के बिना मनुष्य अन्धा है, परन्तु इस महान ाक्ति से भी बढ़कर धर्म की ाक्ति को स्थान दिया गया है। ऋषियों में वद्ध, धनवान्, धनुर्धारी और विद्वान् का इतना मान नहीं था, जितना एक धार्मिक कार्य में एक धार्मिक महात्मा का।

दूसरी ाक्तियों को नानाविध प्रयत्नों से अपने भीतर उत्पन्न करते हुए भी वे धर्म को अपना एक लक्ष्य समझते थे। वेदों के अन्दर धर्म को जीवन का उद्दे य नियत करने का जो सिद्धांत है, उसको ग्रहण करके प्राचीन आर्यों ने अपने ग्रंथों में इसका महत्व प्रतिपादित किया है। उनका यह विचार था कि जहाँ धर्म होता है, वहाँ जय होती है। रामायण में वनवासी राम विजयी होता है तथा लंकापति रावण राम के वाणों से घायल होकर अपने प्राण त्यागता है। जीत सत्यवती सीता की है, न कि कामग्रस्त ूर्पणखा की। महाभारत में दुष्ट दुर्योधन पर धर्मपुत्र युधिष्ठिर को विजय प्राप्त होती है। प्राचीन आर्य के हृदय में यह बात समा नहीं सकती थी कि पाप कभी पुण्य को दबा सकता है। वह यह समझता था कि जब कभी धर्म का सूर्य अधर्म के मेघों में छिप जाता है तो वह तिमिर–भाव थोड़ी–सी देर के लिए है। अन्त में अधर्म की पराजय होती है।

यह वि वास था जो उसको कठिन से कठिन कर्त्तव्यों के पालन के लिए तैयार कर देता है। कोई रोक नहीं थी जो उसकी चाल को पीछे डाल सके। कोई कष्ट नहीं था जो उसको अपने उद्दे य से विमुख कर सके। जिस समय दुर्योधन की अस्त्र- ास्त्रों से सुसज्जित सेना युधिष्ठिर के सामने खड़ी थी, और बड़े-बड़े योद्धाओं का हृदय भीष्म, द्रोण, कृप, अ वत्थामा के नामों से काँपता था, उस समय युधिष्ठिर ने निर्भीक होकर जो लोक पढ़े वे स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य हैं।

जहाँ धर्म, वहीं जय है। - यह वि वास, जिसने युधिष्ठिर को अन्तिम विजय दी, कहाँ से आया? मैं तो समझता हूँ कि यह उस सिद्धांत 'जहाँ धर्म है, वहाँ जय है' - का ही फल था। युधिष्ठिर ने ाास्त्रों को पढ़ा था तथा ाास्त्रों की ि ाक्षा को हृदय में धारण किया था।

ातपथ ब्राह्मण में लिखा है - 'उस ब्रह्म ने कल्याणस्वरूप एक और सष्टि रची, जिसका नाम धर्म है। सो यह राजा का भी राजा है। इसलिए धर्म से बढ़कर कोई नहीं है, अपितु जो बलहीन भी है, वह बड़े बलवान का भी धर्म से इस प्रकार सामना कर सकता है जैसे राजा के आश्रय से सैनिक। तीसरे आरण्यक में आया है, धर्म से सारे जगत् की प्रतिष्ठा है। लोग भी धर्मात्मा पुरुष की ओर झुकते हैं। जीवन के जो चार उद्दे य (पुरुषार्थ) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष समझे जाते थे, इनमें 'धर्म' सर्वप्रथम रखा गया था। 'धर्म' से ाून्य 'अर्थ' और 'काम' का मोल एक कौड़ी के समान नहीं माना जाता। मनुस्मति में उपदे ा है कि रक्षा किया हुआ धर्म, रक्षा करता है और हनन किया हुआ धर्म, हनन करता है, इसलिए सदा इसकी रक्षा करनी चाहिए। धर्म को इतने उच्च आसन पर स्थापित करने के कारण ही आर्यावर्त को धर्मप्रधान दे ा गिना जाता है। यहाँ के राजा-महाराजाओं ने सम्राट् के सिंहासन तजकर परिव्राजक बनना स्वीकार किया। यहाँ भी राजकन्याओं ने पति से भिन्न अन्य का संग - स्प ा करना स्वीकार नहीं किया, पर अपने ारीरों

को अग्नि की चिता पर दाह कर दिया। धर्म की आज्ञा उनके जीवन के एक-एक भाग की विधि थी। केवल ध्यान (उपासना-पूजा) ही धर्म का कर्तव्य नहीं, अपितु दातुन, स्नान एवं भोजन भी धर्म के भाग हैं। जीवन का कोई विभाग ऐसा नहीं जो धर्म की मर्यादा से बाहर हो। इस पतित अवस्था में भी सहस्रों नहीं, अपितु लाखों नर और नारी हैं जो इस लोक की यात्रा की अपेक्षा परलोक की यात्रा की अधिक चिंता करते हैं। मनु महाराज की आज्ञा है कि 'द्विज लोग वि ोष रूप से इस आर्यावर्त दे ा में वास करें, क्योंकि यह दे ा वेद तथा यज्ञ का दे ा है।"

एक घातक विचार - आजकल इस दे ा में, जहाँ धर्म जीवन की प्रत्येक ाक्ति पर व्याप्त था, लोगों में यह विचार उत्पन्न हो गया है कि 'धर्म हमारे जीवन के लिए हानिकारक है तथा हम तब तक एक राष्ट्र नहीं बना सकते जब तक धर्म को अपने दे ा से बाहर न निकाल दें। 'धर्म के विषय में यह विचार है कि 'यह झगड़ों को पैदा करता है, समाज के एक वर्ग को दूसरे से सर्वथा पथक् कर देता है, व्यक्तियों को राष्ट्रीय श्रंखला में बाँधे जाने से रोकता है, एकता का ात्रु है, मस्तिष्क को मानसिक दासता में बन्दी बनाए रखता है और सहानुभूति के भाव को ुष्क कर देता है, अर्थात् कोई बुराई नहीं और कोई दोष नहीं जिसके लिए धर्म उत्तरदायी नहीं है। मनुष्यों का कल्याण तभी संभव है जब लोग धर्म के घेरे से बाहर हो जाएँगे।

उपर्युक्त विचार नास्तिक मण्डली के होते तो उपालम्ध के लिए कोई स्थान न होता। जो लोग परमात्मा को ही छोड़े चुके हैं, उनको इस विषय पर विचार करने की आव यकता नहीं है कि हमारे कर्तव्य परमात्मा की ओर क्या हैं और हमें संध्या और उपासना किस प्रकार करनी चाहिए, परन्तु आस्तिक भी कुछ ऐसा ही विचार करने लगे हैं। यह विचार बड़ा हानिकारक है।

(महात्मा हंसराज ग्रन्थावली भाग-2)

स्वातंत्र्यवीर सावरकर की स्मति में नमन

–पण्डिता राके ारानी

दे ा की देहरी पर अपने प्राणों को दीपक बनाकर कालझंझा से जूझने वाले महापुरुष थे हिन्दू संगठक स्वातन्त्र्यवीर सावरकर। 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र की इतिहास प्रसिद्ध नगरी नासिक के समीप ग्राम भगूर में जन्मा यह महापुरुष 26 फरवरी 1966 को अपने जीवन के 83 संघर्षपूर्ण वर्ष पूर्ण कर स्वेच्छया देहार्पण कर अमर हो गया। वह आजीवन दीपक बनकर जला और वह नक्षत्र बन गया है।

जब वह जन्मा था तो देव दयानन्द अपनी दैहिक यात्रा पूर्ण कर रहे थे और क्रान्तिवीर वासुदेव बलवन्त फड़के भारतीय गणराज्य का स्वप्न नेत्रों में संजोए स्वदे ा से दूर अदन में अपनी अन्तिम वास ले चुके थे। महान दा र्निक कार्ल मार्क्स की जीवन ज्योति वीर सावरकर के जन्म से 74 दिन पूर्व लंदन के एक अज्ञात कोने में बुझ चुकी थी। ऐसे उद्भ्रान्त वायुमंडल में जन्मे सावरकर के जीवनवत्त पर दष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक क्रान्ति के जनक महर्षि दयानन्द राष्ट्रभक्ति के प्रेरणा पुंज फड़के और समष्टिवाद के द र्निकार मार्क्स की दिव्य ज्योति का संगम ही थे सावरकर।

मातभूमि के प्रति अनन्य निष्ठा, वैदिक चिन्तन, द र्न से प्राप्त उदात्त भाव भूमि तथा हिन्दुस्तान के पौरुषपूर्ण इतिहास से प्रेरित विनायक दामोदर सावरकर ने जीवन की सभी आ ाओं, आकांक्षाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को विदे ाी पराधीनता से मुक्ति के लिए चल रहे स्वातन्त्र्य यज्ञ में प्रसन्नमना समर्पित कर स्वयं को धन्य माना था। अंडमान की क्रूर कारागार में अपने यौवन के एक द ाक से भी अधिक की अवधि उन्होंने यमयातनाएँ झेलते हुए बिताईं। अन्य कारागारों में भी उन्होंने वर्षों तक स्वातन्त्र्य साधना की। हिन्दुत्व के द र्न के सफल व्याख्याकार और इतिहासकार विनायक ने राष्ट्र स्वातन्त्र्य के पथ के विघ्न और बाधाओं पर पार पाने के लिए राजनीति के हिन्दूकरण और हिन्दू के सैनिकीकरण का महान सूत्र राष्ट्र को प्रदान किया था। सावरकर ने अपनी कल्पना का हिन्दुओं के सैनिकीकरण का महान सूत्र राष्ट्र को प्रदान किया था।

सावरकर की कल्पना का हिन्दू और हिन्दुत्व राष्ट्रीयता का पर्यायवाची था। यह मतमतान्तर और संप्रदायवाद की विभाजक श्रंखलाओं से सर्वथा मुक्त था। उन्होंने हिन्दू ाब्द की जो इतिहास सम्मत सरल तथा सार्थक व्याख्या की वह यही थी कि जो भारत भूमि को अपनी मातभूमि, पितभूमि और पुण्य भूमि स्वीकार करता है, वह चाहे किसी भी मत, पंथ और सम्प्रदाय का अनुगामी क्यों न हो, हिन्दू है। हिन्दुत्व एक जीवन ौली है। वीर सावरकर के महान त्याग और तपस्या के समक्ष नागराज हिमालय भी नतमस्तक था, उसकी प्रबल वीरता को देखकर पौरुष और पराक्रम को भी आ चर्य होता रहा। सागर की उत्ताल तरंगों को उसने बन्दूकों से हो रही गोलियों की सतत बौछार के जारी रहते पार कर फ्रांस के तट का स्प ा किया था। वहाँ उनकी गिरफ्तारी के फलस्वरूप भारत स्वतन्त्रता का प्र न पहली बार हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के माध्यम से वि व मंच पर गुंजित हुआ। वह वि व में एक ऐसा अनुपम इतिहासकार था जिसने अपनी अडिग राष्ट्रनिष्ठा के बल पर अपने जीवन को ही एक अग्निदाहक इतिहास का रूप दे दिया था। वह महान् राष्ट्रभक्त सत्य पथ का प्रद ाक और सफल दि ाानायक भी था।

भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर से विरक्त वीर सावरकर प्रभावी व्यक्तित्व के धनी थे, तेजस्वी वक्तत्व उनकी वाणी का श्रंगार था और व्यापक दे ा हितैषी बुद्धि उनकी पूँजी थी तो सागर सरीखा गंभीर और गिरि ाखर सरीखा उच्च और उदात्त था उनका मन .....

मौत की छाया में पले महापुरुष सावरकर मत्युंजय बन गए थे। उनके जीवन का एक वै ाष्ट्य यह रहा कि वह अजेय वीर की तरह जिए और अपराजेय रहकर उन्होंने अपनी अन्तिम साँस ली। दे ाभक्ति के जिस साँचे में वे ढले थे वह वज्र का था। अन्तिम क्षण तक उनका वज्र संकल्प अपने ौर्यगह में अटल रहा। न वे झुके और न टूटे। ऐसी अद्वितीय थी उनकी ौर्य स्फूर्ति। विदे ाी सत्ताधी ा आंग्ल प्रभुओं ने अपनी विभाजन और ाासन की नीति से दे ा को बीसियों हिस्सों में विभाजित कर दिया था। सावरकर जी ने उसे राष्ट्र का निर्धारित

व्यक्तित्व स्वीकार न कर एक अखंड भारत–राष्ट्र के सनातन अस्तित्व को ही सर्वोपरि महत्व दिया। मत्युपर्यन्त उनका यही अडिग वि वास रहा कि दे ा में जो विभाजन प्रचारित हैं, वे कृत्रिम हैं एवं दे ा को विघटित करने के लिए ऊपर से थोपे हुए हैं। अन्तराल में दे ा की अविभक्त संस्कृति का मूल वस्तुतः एक ही है। राष्ट्र के इसी राजनीतिक व्यक्तित्व को अपनी आस्था और श्रद्धा में प्रतिष्ठित कर वीर सावरकर ने दे ाभक्ति और राष्ट्रभक्ति के जो सिद्धान्त निर्धारित किए उन पर वे आजीवन सिंह ार्दूल की तरह निः ांक और निर्भीक आचरण करते रहे।

उनकी पावन जयन्ती के प्रेरक अवसर पर उनके स्मरण के साथ ही आर्यावर्त के उन ऋषि–मनीषियों के तपःपूत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व सहसा मानस पटल पर चित्रित हो उठते हैं जिन्होंने इस सनातन राष्ट्र के ारीर और प्राणात्मा को अपने मानस मन्दिर में भक्तिपूर्वक पूजा था और राष्ट्र की आस्था के मध्य ाक्ति–स्फूर्ति मन्त्र की काया में बद्धमूल किया था।

हुतात्मा संकल्प में ढले अपराजेय योद्धा वीर सावरकर कर्म ार ही नहीं अपितु महान चिन्तक, महाकवि और महान इतिहासकार भी थे। अपनी ौर्याकांक्षा में वे जैसे अद्वितीय थे वैसे ही वे इन कर्मक्षेत्रों में भी बेजोड़ थे। उनकी चारित्रिक वि ोषता यह थी कि दुर्दान्त बज्रदंडों से वर्षों दंडित–पीड़ित और अपने विरोधि ायों से लांछित सन्तप्त रहकर भी उनकी मानसिकता कभी विचलित नहीं हुई।

उनके मन का महासागर कभी अपनी मर्यादा से च्युत नहीं हुआ। जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे द्वेषभाव से सर्वथा मुक्त रहे। अन्दर और बाहर दोनों से क्रान्तिकारी उस नरपुंगव ने स्वदे ा की स्वतंत्रता के जिस स्वप्न को अपने नेत्रों में संजोकर अंगारों से भरे पथ पर कदम बढ़ाया था, उसे अपने जीवनकाल में ही स्वतन्त्र देख पाने का सौभाग्य तो उन्होंने पाया किन्तु समाज को भी रूढ़िवादिता, अन्धवि वास और काल बाह्य संस्कारों से मुक्त कराने की उनकी जो मनोकामना थी, वह उनके जीवित रहते सफल नहीं हो पायी। उनके द्वारा प्रदर्ा ित पथ से भटका समाज आज दिग्भ्रमित है, विखंडित है। हमारा

अडिग वि वास है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सत्य और तथ्यपरक इतिहास में वीर सावरकर का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा और भावी पीढ़ियाँ जब भारत के राजनीतिक मंच पर खगोल तुल्य चमके-दमके गर्वोन्नत नेताओं और सत्ता को जीवन का एकमात्र लक्ष्य मानकर उसकी प्राप्ति हेतु किसी भी पथ-कुपथ का अनुगमन करने वाले मदान्ध राजनीतिज्ञों को भूल जाएगी तब भी वीर सावरकर भारत के भाग्याका ा पर ध्रुव के समान जगमगाते नक्षत्र बनकर जाज्वल्यमान रहेंगे। उनके नाम से, उनके प्रेरक और आग्नेय जीवन के प्रका ा से भारतीय नवयुवक आग से खेलने की प्रेरणा ग्रहण कर दे ा को गौरवान्वित करने की राह पाएगा।

यद्यपि इस विडम्बना की भी अनेदेखी नहीं की जा सकती कि जो लोग वीर सावरकर जैसे सिंह सपूतों के त्याग और बलिदान के दम पर मिली स्वतंत्रता के बाद सत्ता के आसन पर आसीन होकर आद र्ों को भूलते रहे हैं वे उनके नाम को भी दे ा के इतिहास से विस्मत करा देने जैसे उपक्रम में भी जाने-अनजाने लिप्त रहे। किन्तु सावरकर की जन्मदायिनी परम पुनीता भारतमाता को नि चय ही अपने उस लाडले लाल पर गर्व है। परिस्थितियाँ पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि उसी के पथ के अनुगमन से राष्ट्र को समस्याओं से मुक्त किया जा सकता है। उस युगस्रष्टा, युगद्रष्टा की पावन जयन्ती के अवसर पर हम उस ज्योतिर्मय दीपक के प्रति अपने श्रद्धासुमन समर्पित करते हैं। दे ाभक्ति की स्फूर्ति में अतुल साहस और अप्रतिम ौर्य को अनुप्राणित करने वाले उस वीरव्रती का पुण्य स्मरण कर कृतज्ञ राष्ट्र उसके व्रत को श्रद्धा सहित अपनी कर्म चेष्टा में उतारने का संकल्प करेगा। वि वात्मा सभी को उस आद र्ा चरित्र का अणुमात्र अनुगमन करने की क्षमता प्रदान करें।

'जनज्ञान' से साभार

वामपंथी इतिहासकारों द्वारा इतिहास का विकृतीकरण (1)

–अ वनी कुमार (संपादक पंजाब केसरी)

इस दे ा में हमे ा षड्यंत्र के तहत हिन्दुओं की आस्था पर करारी चोट की जाती रही है। हिन्दुओं के आस्था स्थलों की पहचान और हिन्दुओं के आराध्य देवों का अपमान किया जाता है। पहले तो अंग्रेजों ने अपने ासनकाल में इतिहास से छेड़छाड़ की और हिन्दुओं को पिछड़े, भ्रष्ट, कायर और दकियानूसी, पाखंडी तथा जातिवादी सिद्ध करने का प्रयास किया। मुस्लिम आक्रांताओं के काले कारनामों पर पर्दा डाला गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी काँग्रेस के तथाकथित ध र्मनिरपेक्ष नेताओं और वामपन्थियों ने इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया।

श्रीमती इंदिरा गाँधी ने वामपंथी विचारधारा के डा. नूरुल हसन को केन्द्रीय ि ाक्षा राज्यमंत्री का पद सौंपा। डॉ. हसन ने तुरन्त इतिहास तथा पाठ्य पुस्तकों के विकृतीकरण का काम ुरू किया। वामपंथी इतिहासकारों और लेखकों को एकत्रित कर इस काम को अंजाम देना ुरू किया।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् का गठन किया गया और पाठ्य पुस्तकों में हिन्दुओं के बारे में अनर्गल बातें लिखी गईं। गोरक्षा के लिए भारतीयों ने अनेक बलिदान दिए। इसके बावजूद छात्रों को यह पढ़ाया गया कि आर्य गोमांस का भक्षण करते थे। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने वाले गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान को भ्रामक ढंग से वर्णित किया गया। प्रो. सती ा चन्द्र द्वारा लिखित एनसीईआरटी की कक्षा 11वीं की पुस्तक 'मध्यकालीन भारत' में लिखा गया– **"गुरु तेग बहादुर ने असम से लौटने के बाद ेख अहमद सरहिन्द के एक अनुयायी हाफिज आमिद से मिलकर पूरे पंजाब प्रदे ा में लूटमार मचा रखी थी और सारे प्रांत को उजाड़ दिया था।" "गुरु को फाँसी उनके परिवार के कुछ लोगों की साजि ा का नतीजा थी, जिसमें और लोग भी**

ाामिल थे, जो गुरु के उत्तराधिकार के विरुद्ध थे। किन्तु यह भी कहा जाता है कि औरंगजेब गुरु तेग बहादुर से इसलिए नाराज था, क्योंकि उन्होंने कुछ मुसलमानों को सिख बना लिया था।"

धर्मनिरपेक्षता के नाम पर गुरु तेग बहादुर जैसी दिव्य विभूति को लुटेरा बताना और औरंगजेब के अत्याचारों की घटना पर पर्दा डालने का प्रयास करना अक्षम्य अपराध ही है। छद्म धर्म निरपेक्षता के ठेकेदारों ने हिन्दू समाज की गलत तस्वीर पे ा की। जब केन्द्र में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार बनी तो केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जो ाी ने पाठ्य पुस्तकों से गुरु तेग बहादुर, भगवान महावीर और अन्य महापुरुषों पर आरोप लगाने वाले अं ा हटवाने का प्रयास किया तो धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने बवाल मचाना ाुरू कर दिया और आरोप लगाया गया कि भाजपा सरकार ि ाक्षा का भगवाकरण कर रही है।

इस बवाल के बीच कट्टरपंथी कभी सरस्वती वंदना को इस्लाम विरोधी बताकर स्कूलों का बहिष्कार करते रहे तो कभी वे अपने बच्चों को ग से गणे ा पढ़ाने की बजाय ग से गधा पढ़ाने की सीख देते रहे। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर ि ावाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह जी और वीर सावरकर आदि के प्रेरक जीवन चरित्रों से छात्रों को वंचित किया जाता रहा। प्रफुल्ल बिदवई जैसे लेखकों ने अपने आलेख Fight Hindutva Head on में Poisonous Hindutva ाब्द का इस्तेमाल किया था यानी जहरीला हिन्दुत्व। मैंने तब भी सवाल किया था–

उन्माद और न ंसता की राजनीति की झीनी चादर देकर किसने ऐसा बना दिया कि भारत में हिन्दुत्व को जहरीला कहा जा रहा है?

तथाकथित कुछ अंग्रेजीदाँ बुद्धिजीवियों ने इस राष्ट्र के हिन्दुत्व को घणा, विद्वेष, क्रूरता का पर्याय न केवल स्वीकार किया बल्कि बार–बार ऐसा लिखा भी।

अदालती फैसलों पर सियासत का खेल

-सुधां ाु रंजन

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या करने वाले बलवंत सिंह राजोआना को मिली मौत की सजा से एक बार फिर इस विषय और दया याचिका पर बहस तेज़ हो गई है। राजोआना ने यह हत्या पंजाब में आतंकवाद के विरुद्ध चलाए जा रहे ऑपरे ान के दरम्यान कथित रूप से हुए मानवाधिकार उल्लंघन के विरोध में की थी। इसने अदालत में अपना बचाव किए बिना यह स्वीकार किया कि उसने ही मानव बम दिलावर सिंह की कमर में बेल्ट बाँधी थी और दंड केवल उसे मिलना चाहिए। उसे जिला अदालत से मत्युदंड दिया गया जिसके खिलाफ उसने कोई अपील नहीं की। इसलिए हाई कोर्ट ने जिला अदालत के निर्णय की पुष्टि की और मामला वहीं समाप्त हो गया क्योंकि उसके विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में कोई अपील नहीं हुई।

राजोआना के पक्ष में माहौल

लेकिन राजोआना के पक्ष में पंजाब में ऐसा माहौल बना कि 23 मार्च 2011 को अकाल तख्त ने उसे 'जिंदा ाहीद' का सर्वोच्च खिताब दे दिया। 31 मार्च को उसे फाँसी दी जानी चाहिए थी, किन्तु ि ारोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी ने राष्ट्रपति के समक्ष दया याचिका दायर कर उसकी फाँसी की सजा को खत्म करने की गुहार लगाई। पंजाब सरकार ने इसका समर्थन किया। केन्द्र सरकार ने जन भावना को देखते हुए उसकी फाँसी पर रोक लगा दी। उसकी सजा पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में भी एक याचिका दायर की गई जिसे अदालत ने इस आधार पर खारिज कर दिया कि याचिका राजोआना ने स्वयं दायर नहीं की थी। (हाल ही में राजोआना को मत्युदंड देने में विलम्ब के कारण उसकी सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया है। संपा.)

दया याचिकाओं पर देरी

अभी सुप्रीम कोर्ट देबिन्दर पाल सिंह भुल्लर के मत्युदंड पर भी विचार कर रहा है जिसे विलंब के आधार पर खत्म करने

की प्रार्थना की गई है। इस मामले में सुनवाई के क्रम में सुप्रीम कोर्ट ने राजोआना मामले में पंजाब सरकार के इस रुख पर कड़ा ऐतराज जताया कि यदि राज्य का यह पक्ष है तो फिर अभियोजन को ाुरू से ही यह पक्ष लेना चाहिए था जिससे करोड़ों रुपये तथा समय की बचत होती। आ चर्यजनक रूप से बेअंत सिंह के परिवार वालों ने भी राजोआना को माफी देने की अपील की है। बलवंत सिंह राजोआना के मामाले में एक तकनीकी सवाल यह है कि उसके दो सह अभियुक्तों के मामले पर सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएँ लंबित हैं। यदि उन दोनों को किसी तरह का लाभ मिलता है तो स्वाभाविक है कि उसका लाभ राजोआना को भी मिलना चाहिए। हरबंस सिंह बनाम उत्तरप्रदे ा, 1982 में सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी है कि किसी को भी फाँसी दिए जाने के पहले जेल अधीक्षक को व्यक्तिगत रूप से यह पक्का पता कर लेना चाहिए कि उसके किसी सह-अभियुक्त के मत्युदंड को आजीवन कारावास में बदला तो नहीं गया है। यदि ऐसा हुआ है तो उसे अपने वरिष्ठ अधि ाकारियों को इसकी सूचना देनी चाहिए जो संबद्ध अदालत को इसकी सूचना देंगे। दरअसल, हरबंस सिंह मामले में ऐसा हुआ था कि एक ही निर्णय से तीन अभियुक्तों को फाँसी की सजा दी गई, मगर सभी तीनों का हश्र अलग-अलग हुआ। उन तीन में एक जीता सिंह ने कोई समीक्षा याचिका या सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दायर नहीं की और 6 अक्टूबर 1981 को उसे फाँसी पर चढ़ा दिया गया। दूसरा क मीरा सिंह मत्युदंड को आजीवन कारावास में बदलवाने में सफल रहा। तीसरे हरबंस सिंह को उसी दिन फाँसी होनी थी जिस दिन जीता सिंह को हुई, लेकिन उसने सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दायर कर दी जिस पर उसे अदालत ने फाँसी दिए जाने पर रोक लगा दी। चूंकि क मीरा सिंह की फाँसी की सजा को सुप्रीम कोर्ट ने आजीवन कारावास में बदल दिया, इसलिए हरबंस सिंह के लिए भी उसने राष्ट्रपति से ऐसा करने की आनु ांसा की। अदालत ने दुख व्यक्त किया कि जीता सिंह को इसका लाभ नहीं मिल

पाया क्योंकि उसे पहले ही फाँसी दी जा चुकी थी। इसलिए उसने ऐसा निर्दे ा दिया कि फाँसी दिए जाने से पहले जेल अधीक्षक यह पता करें कि किसी अन्य सह–अभियुक्त की सजा कम या माफ़ तो नहीं हुई है।

अभी विवाद का सबसे बड़ा मसला है दया याचिकाओं पर होने वाला विलंब। 1975 से 1991 के बीच करीब 40 व्यक्तियों को फाँसी दी गई। परंतु उसके बाद 27 अप्रैल 1995 को ऑटो ांकर को सेलम, तमिलनाडु में फाँसी पर लटकाया गया। इसके बाद अब तक केवल एक फाँसी हुई जब अगस्त 2004 में

मदर टेरेसा के जीवन का अज्ञात पक्ष

–हरिकृष्ण निगम

मदर टेरेसा हमारे दे ा के लिए अब चिरपरिचित नाम है और नोबेल पुरस्कार पाने तथा कोलकाता को केन्द्र बनाकर अपना सारा जीवन गरीबों, रोगियों व सड़कों पर पड़े मरणासन्न लोगों की सेवा में निछावर करने की उनकी छवि हमारे मानस–पटल पर इतनी गहरी है कि उनके छुपे हुए चेहरे के अनेक चित्र जो अनेक पा चमी खोजी पत्रकारों व लेखकों ने प्रस्तुत किए हैं, उन पर सहसा वि वास नहीं होता। वैसे भी हमारे दे ा में जीवन–चरित्र लिखने वालों का यह पारम्परिक स्वभाव माना जाता है कि जिसके य ोगान अथवा जिसकी प्र ास्ति के लिए वे लेखनी उठाते हैं, उसकी तारीफों के पुल बाँधने के अलावा कभी एक भी नकारात्मक संदर्भ, चाहे वे कड़वे सच ही क्यों न हों, कभी नहीं लिखते। स्वााविक है कि वेटिकन द्वारा सन्त घोषित करने के बहुत पहले मदर टेरेसा को ईसाई देवी के रूप में प्रचारित किया गया था। पर यही पूरा सच नहीं है।

मदर टेरेसा को मिलने वाली धनरा ा के स्रोतों पर सदा विवाद उठते रहे हैं। अपदस्थ ताना ाह जीनक्लाड (बेबीडॉक) नाम से प्रसिद्ध) डुवालियर से मदर टेरेसा के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। हायती का यह कुख्यात ताना ाह और उसकी पत्नी मि ोल अपने दे ा से कई बिलियन डालर (खरबों रुपये) चुराकर स्पेन में जा बसे थे। इस ताना ाह ने नरसंहार में भाग लिया था। मदर टेरेसा ने उससे कई मिलियन डॉलर की रा ि ही नहीं ली बल्कि उसके रक्तरंजित हाथों से अपने सम्मान में पदक भी लिए। इन सबके बदले में क्रिस्टोफर हिचिंग नामक ब्रिटि ा लेखक ने मदर टेरेसा पर टेलीविज़न के लिए एक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी बनाई थी, वे उसे 'धार्मिक हिपोक्राइट' की संज्ञा दे चुके हैं। उन्होंने यह भी प्र न उठाया है कि बेईमानी से कमाए हुए लगभग पाँच करोड़ रुपये भी क्या कोलकाता के गरीबों पर खर्च हुए हैं। हिचिन्स ने अपने ग्रन्थ 'द मि ानरी पोजी ान' **मदर टेरेसा के जीवन**

मदर टेरेसा के जीवन का अज्ञात पक्ष

–हरिकृष्ण निगम

मदर टेरेसा हमारे दे ा के लिए अब चिरपरिचित नाम है और नोबेल पुरस्कार पाने तथा कोलकाता को केन्द्र बनाकर अपना सारा जीवन गरीबों, रोगियों व सड़कों पर पड़े मरणासन्न लोगों की सेवा में निछावर करने की उनकी छवि हमारे मानस–पटल पर इतनी गहरी है कि उनके छुपे हुए चेहरे के अनेक चित्र जो अनेक पि चमी खोजी पत्रकारों व लेखकों ने प्रस्तुत किए हैं, उन पर सहसा वि वास नहीं होता। वैसे भी हमारे दे ा में जीवन–चरित्र लिखने वालों का यह पारम्परिक स्वभाव माना जाता है कि जिसके य ोगान अथवा जिसकी प्र ास्ति के लिए वे लेखनी उठाते हैं, उसकी तारीफों के पुल बाँधने के अलावा कभी एक भी नकारात्मक संदर्भ, चाहे वे कड़वे सच ही क्यों न हों, कभी नहीं लिखते। स्वाााविक है कि वेटिकन द्वारा सन्त घोषित करने के बहुत पहले मदर टेरेसा को ईसाई देवी के रूप में प्रचारित किया गया था। पर यही पूरा सच नहीं है।

मदर टेरेसा को मिलने वाली धनरा ि के स्रोतों पर सदा विवाद उठते रहे हैं। अपदस्थ ताना ाह जीनक्लाड (बेबीडॉक) नाम से प्रसिद्ध) डुवालियर से मदर टेरेसा के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। हायती का यह कुख्यात ताना ाह और उसकी पत्नी मि ोल अपने दे ा से कई बिलियन डालर (खरबों रुपये) चुराकर स्पेन में जा बसे थे। इस ताना ाह ने नरसंहार में भाग लिया था। मदर टेरेसा ने उससे कई मिलियन डॉलर की रा ि ही नहीं ली बल्कि उसके रक्तरंजित हाथों से अपने सम्मान में पदक भी लिए। इन सबके बदले में क्रिस्टोफर हिचिंग नामक ब्रिटि ा लेखक ने मदर टेरेसा पर टेलीविज़न के लिए एक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी बनाई थी, वे उसे 'धार्मिक हिपोक्राइट' की संज्ञा दे चुके हैं। उन्होंने यह भी प्र न उठाया है कि बेईमानी से कमाए हुए लगभग पाँच करोड़ रुपये भी क्या कोलकाता के गरीबों पर खर्च हुए हैं। हिचिन्स ने अपने ग्रन्थ 'द मि ानरी पोजी ान'

में लिखा है कि उनके अस्पताल में जब भी विदे ाी डाक्टर आए, उन्होंने वहाँ की चिकित्सा के ढंग को अनुपयुक्त पाया, क्योंकि मदर टेरेसा की रुचि गरीबों की चिकित्सा करने में नहीं, बल्कि लोगों को ईसाई बनाने एवं अपने लिए सन्त की पदवी प्राप्त करने में थी। दूसरी लेखिका अन्ना सेबा का कहना था कि उनको डाक्टरों और नर्सों की आव यकता कभी नहीं पड़ी। उनका मि ान स्पष्ट और सादा था। वे आसन्नमत्यु रोगियों को ईसामसीह के सन्दे ा सुनाना चाहती थीं। उनको कुछ और समय या कुछ और वर्षों तक जीवित रखना उनका मन्तव्य कभी नहीं था।

'होप फॉर डाईंग' का मंत्र प्रचार का एक बड़ा अस्त्र था। वि वप्रसिद्ध चिकित्सा पत्रिका 'लान्सेन्ट' के सम्पादक डॉ. रोबिन कॉक्स ने भी कहा था कि उनके अस्पताल अत्यन्त अस्वास्थ्यकर रहे हैं। कोलकाता के गरीबों और रोगियों के लिए दुनिया से मिले दान की एक कौड़ी भी वहाँ नहीं खर्च होती थी। एनासिन या एस्प्रिन जैसी दवाओं के अलावा वहाँ कुछ नहीं था इससे बड़ी विस्मयजनक बात यह है कि **मदर टेरेसा के मरने के बाद न्यूयार्क के ब्रांक्स-स्थित एक बैंक में उनके 50 मिलियन डॉलर (लगभग 2 अरब 15 करोड़ रुपये) जमा पाये गए। इनमें से कुछ भी कोलकाता के गरीबों पर खर्च नहीं हुआ था, जबकि उन्हींके नाम पर यह दान एकत्र किया गया था। सबकी नजरों से ओझल भारत के गरीबों के नाम पर ऐसा विदे ाों के कई बैंकों में उनका पैसा था।**

क्योंकि उनकी कैथोलिक आस्था रूढ़िवादी थी, इसलिए अपने संगठन की किसी साध्वी द्वारा, चाहे कपड़े धोने या सुखाने की बात हो, वे किसी म ाीन के उपयोग के विरुद्ध थीं और बहुध ाा कहती थीं कि उन्होंने गरीबी की प्रतिज्ञा ली है, कार्यकु ालता की नहीं। धार्मिक अनु ाासन और जिद्द के कारण वे सब पर कड़ा नियंत्रण रखती थीं।

पिछले पोप मदर टेरेसा को सन्त घोषित करने में जल्दबाजी

क्यों कर रहे थे और 'बीटिफिके ान' के दावे के लिए अपेक्षित संख्या में चमत्कारों के प्रकरण क्यों जुटाए जा रहे थे? अनेक लेखकों ने साफ कहा है कि उनके नाम का प्रयोग एि ाया में मतान्तरण की रणनीति को प्रभावी बनाने के लिए किया जाना था। इसीलिए जब पोप जॉन पाल द्वितीय ने रोमन कैथोलिक चर्च के प्रमुख के रूप में अपना पच्चीसवाँ वर्ष मनाया था तब मदर टेरेसा को केन्द्रबिन्दु बनाने के पीछे पूर्वी यूरोप एवं दक्षिणी पूर्वी एि ाया के दे ाों में मतान्तरण की गतिविधियों को नया आध ाार देना था।

अन्ना सेबा नामक लेखिका ने जोर देकर लिखा है कि वेटिकन की रणनीति में सन्त बनाना भी एक उद्योग जैसा है जिसके द्वारा मदर टेरेसा के भावी प्रभाव का आकलन किसी दिन प्रचार में निर्णायक तत्व बन सकता है। ततीय वि व में, खासकर भारत में, नए अनुयायियों की खोज को पोप ने पहले ही प्राथमिकता देते हुए यह नई सहस्राब्दी भारत के 'इवेन्जेलाईजे ान' को समर्पित की थी।

मत्यु के उपरान्त मदर टेरेसा के पत्र और उनकी निजी डायरियाँ सामने आई हैं। वे कभी लिखतीं-मेरी मुस्कान एक बड़ा छलावा है। मुझे लगता है ई वर मुझे नहीं चाहता है। कभी वे लिखतीं मुझे लगता है ई वर का अस्तित्व है ही नहीं। उस ई वर का अस्तित्व हो ही नहीं सकता जिसके चरित्र का वर्णन बाईबिल में है, आदि, आदि।

उनके जीवन का एक छिपा पक्ष यह भी था कि उन्हें धनी अपराधी अत्यन्त प्रिय थे। प्रसिद्ध अमेरिकी उद्योगपति चार्ल्स कीटिंग, जो कैलिफोर्निया की जेल में सजा काट रहा है और राबर्ट मैक्सवेल, जिसने यह समझने पर कि स्काटलैण्ड यार्ड ने उसके विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण जुटा लिए हैं, आत्महत्या कर ली थी-दोनों ही उनके प्रिय पात्र थे। दोनों ने सैकड़ों मिलियन डालर धोखाधड़ी से कमाये थे। कैलिफोर्निया के डिपुटी जिला अटार्नी पाल टर्ले के अनुसार कीटिंग ने 100 मिलियन डालर

(लगभग 36 अरब रुपये) से अधिक सामान्य लोगों की बचतों में से चोरी किये थे।

कीटिंग ने एक मिलियन डालर (4.50 करोड़ रुपये) से अधिक मदर टेरेसा को क्यों दिए थे? जब कीटिंग पर मुकदमा चल रहा था, मदर टेरेसा ने जज लान्स आइटो को लिखा कि कीटिंग गरीबों के प्रति दयालु रहे हैं, इसलिए उन्हें क्षमा कर दिया जाए। मदर टेरेसा की इस प्रार्थना के जवाब में जज ने उन्हें लिखा कि यही चुनौती मैं आपको देता हूँ। आप अपने आपसे पूछिए कि ईसामसीह क्या करते ऐसी स्थिति में, यदि अपराध के द्वारा कमाया हुआ यह धन उन्हें दिया जाता। वह अव य ही उस धन को उन्हें लौटा देते। दूसरों का धन जो कीटिंग ने आप तक पहुँचाया उसे अपने पास न रखें। उन लोगों को लोटा दें जिनका धन चुराया गया था, पर मदर टेरेसा ने उसकी इस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया, न उसका कोई उत्तर दिया। मजे की बात है कि रोमन कैथोलिक पादरी, जो उनको संत का दर्जा दिलाने के समर्थन में अभिलेख तैयार कर रहे थे, कहते रहे- जीसस ने भी तो नैतिक रूप से भ्रष्ट रोमन टैक्स-अधि ाकारियों के साथ भोजन किया था जब वे गरीबों के लिए कुछ करने को तैयार थे। पादरी कोलोडीचुक ने लिखा-मदर टेरसा का मि ान व्यक्तियों की सहायता करना था, सामाजिक परिवर्तन के लिए लड़ना नहीं।

ये तथ्य पि चमी मीडिया में प्रकाि ात हो चुके हैं। संभव है ये तथ्य हमारे दे ा के अधिकां ा लोगों की नज़र में नहीं आए हों। **जहाँ ांकराचार्य जैसे हिन्दू धर्माचार्य की छवि मलिन करने में अंग्रेजी मीडिया और राजनीतिज्ञों का एक वर्ग सदैव तत्पर रहता है, मदर टेरेसा की छवि से भयाक्रान्त और पि चमी दे ाों में वाहवाही लूटने की ललक वाले हमारे ही बुद्धिजीवी इन बातों को अनदेखा करते हैं। का ा! यदि उन सबको सत्य का ज्ञान होता।**

ए-1002, पंच ील हाईट्स, महावीर नगर,
कान्दिवली (प.) मुम्बई-400067

मदर और मीडिया

हाल में हुई एक रिसर्च में कहा गया है कि मदर टेरेसा कुछ भी हो सकती हैं, लेकिन संत नहीं। यह विवादास्पद रिसर्च अभी छपी नहीं हैं, लेकिन इसके छपने से पहले ही इस पर चर्चा प्रारंभ हो चुकी है। रिपोर्ट बताती है कि वैटिकन ने मदर की उन चीज़ों को अनदेखा किया है, जिनके तहत वह गरीबी और दुख को दूर करने के बजाय उसे महिमामंडित करती रहीं। यूनिवर्सिटी ऑफ मॉट्रियल के साइकोएजुके ान विभाग के सर्गे लर्वी और जेनेवीव केनार्ड के साथ यूनिवर्सिटी ऑफ ओटावा की इस रिसर्च में मदर की सुपरिचित छवि के विपरीत कई निष्कर्ष निकाले गए हैं। इसमें कहा गया है कि उनकी पवित्र छवि तथ्यों पर आधारित नहीं है। उनके बारे में हुई धन्य घोषणा के पीछे भी मीडिया कैंपेन का बड़ा हाथ रहा है। रिसर्च बताती है कि वैटिकन को पहले यह देखना चाहिए था कि मदर की काम करने की ैली क्या थी? अस्वस्थ लोगों के उपचार का उनका संदेहास्पद तरीका, उनके राजनैतिक संबंध, दान में प्राप्त हुए पैसों का इस्तेमाल और गर्भपात, गर्भनिरोधक व तलाक को लेकर उनके कट्टर विचार बेहद पुरानी लीक के थे। मदर की मत्यु के समय उनके कुल 517 मि ान थे, जिन्हें रिसर्च ने 'होम्स ऑफ डाइंग' कहा है। 100 दे ों से यहाँ आने वाले गरीबों और बीमारों के बारे में बताया गया है कि इनमें से दो तिहाई हमे ा डाक्टर का इंतजार करते रहते थे, जबकि बाकी को उचित देखभाल के बगैर ही पड़े रहना होता था। पैसे की कोई कमी न होने के बावजूद इन जगहों पर देखरेख के लिए न तो समुचित संसाधन होते थे, न ही तीमारदार। जबकि खुद मदर का इलाज अमेरिका के एक ानदार अस्पताल में कराया गया। बीबीसी के एक पत्रकार द्वारा मदर के प्रचार के लिए मुहिम चलाने और चमत्कारों द्वारा इंसान को चंगा करने की उनकी ैली पर भी इस रिसर्च ने प्र न खड़े किए हैं। इसे कितना सही माना जाएगा, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन मदर की करुणामयी छवि को इस सबसे ायद ही कोई नुकसान पहुँचे। मदर टेरेसा के अनुयायियों और प्र ांसकों को इस

चाणक्य की त्याग भावना

-र्ाि म

सिकन्दर के भारत विजय के अधूरे सपने को पूरा करने के विचार से सेल्युकस ने वि ाल यूनानी सेना एवं आधुनिक हथियारों के साथ भारत पर चढ़ाई की, किन्तु सम्राट् चन्द्रगुप्त के सैनिकों के आगे वे ठहर नहीं सके। सेल्युकस को अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी तथा चन्द्रगुप्त के साथ अपनी राजकुमारी हेलेना का विवाह भी करना पड़ा।

चन्द्रगुप्त ने भी सेल्युकस का अपेक्षित आदर किया और उसे राजप्रासाद में ठहराया। इसलिए सम्माननीय अतिथि के रूप में सेल्युकस को कहीं भी जाने की छूट थी। लेकिन उसको रह-रह

चाणक्य की त्याग भावना

–र्ि म

सिकन्दर के भारत विजय के अधूरे सपने को पूरा करने के विचार से सेल्यूकस ने वि ााल यूनानी सेना एवं आधुनिक हथियारों के साथ भारत पर चढ़ाई की, किन्तु सम्राट् चन्द्रगुप्त के सैनिकों के आगे वे ठहर नहीं सके। सेल्युकस को अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी तथा चन्द्रगुप्त के साथ अपनी राजकुमारी हेलेना का विवाह भी करना पड़ा।

चन्द्रगुप्त ने भी सेल्युकस का अपेक्षित आदर किया और उसे राजप्रासाद में ठहराया। इसलिए सम्माननीय अतिथि के रूप में सेल्युकस को कहीं भी जाने की छूट थी। लेकिन उसको रह–रह कर यह प्र न कचोट उठता था कि जब उसके पास आधुनिक अस्त्र– ास्त्र एवं वि ााल सेना थी, तो उसे हार का मुँह क्यों देखना पड़ा? वह इस प्र न का उत्तर जानने के लिए बैचेन हो उठा। उसकी यह बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी। हारकर उसने चन्द्रगुप्त से यह प्र न किया। चन्द्रगुप्त ने आचार्य चाणक्य की बुद्धि एवं आ ाीर्वाद को ही इसका कारण बताया। सेल्युकस ने चाणक्य के बारे में पहले भी बहुत कुछ सुन रखा था। अतः इसका समाधान जानने के लिए सेल्यूकस ने चाणक्य से ही मिलने की इच्छा प्रकट की।

चन्द्रगुप्त के साथ सेल्युकस आचार्य चाणक्य के द ार्न करने पहुँचा, उसे देखकर आ चर्य हुआ कि राज्यों के भाग्य–विधाता का निवास एक झोंपड़ी है। जिसके आ ाीर्वाद से युद्ध के परिणाम बदल सकते हैं। ाम का समय हो रहा था। आचार्य चाणक्य संध्यावंदन करने के बाद दीपक जलाकर कुछ लिख रहे थे। दोनों राजाओं ने आचार्य का अभिवादन किया। चन्द्रगुप्त ने आचार्य को बतलाया, सेल्युकस उनसे कुछ चर्चा करना चाहते हैं। चाँदनी रात थी। इससे चाणक्य ने इस चर्चा को बाहर चन्द्र प्रका ा में छेड़ने का सुझाव दिया और भीतर जलते दीपक को बुझाकर तीनों बाहर आकर बैठ गए। सेल्युकस को यह पूरी प्रक्रिया देखकर आ चर्य हो रहा था कि

क्यों पहले आचार्य ने बाहर बैठकर चर्चा करने को कहा और फिर बाहर निकलने से पहले दीपक बुझा दिया?

आखिरकार सेल्यूकस ने इसका कारण चाणक्य से पूछ ही लिया। चाणक्य मुस्कराते हुए बोले – यह तो साधारण सी बात है। अकारण राष्ट्र का तेल क्यों जलाया जाए, जबकि इसके लिए चन्द्रमा का प्रका ा पर्याप्त है। सेल्यूकस देखता रह गया आचार्य से उसे दोनों प्र नों के उत्तर मिल चुके थे। वह समझ गया था कि जिस दे ा में एक-एक बूँद तेल का संरक्षण होता है। वहाँ के नागरिक किसी मोर्चे पर हार का मूँह नहीं देख सकते।

नई दिल्ली

गोबर से बनाएँ चाँद सा रो ान चेहरा

-संजय मालवीय

मुहाँसे खत्म करने और चेहरे पर निख़ार लाने के लिए महँगे आधुनिक फेस पैक, लो ान और मरहम का उपयोग कर चुके युवक-युवतियाँ अब गो ाला की ारण में आ गए हैं। मुहाँसों से छुटकारा पाने के लिए अब गोबर और गोमूत्र का लेप चेहरे पर लगा रहे हैं।

अब तक अपने चेहरे की चमक वापस लाने के लिए कई जतन कर चुके युवाओं के लिए गोबर और गोमूत्र से बना लेप वरदान साबित हो रहा है। छिंदवाड़ा ाहर के युवा आध ाुनिक उपचार छोड़कर इस लेप का उपयोग कर रहे हैं। छिंदवाड़ा के ानिचरा बाजार क्षेत्र निवासी 22 वर्षीय गोलू ार्मा बताते हैं। पिछले चार साल से चेहरे पर मुहाँसे से परे ाान थे। डाक्टरों के बताए अनुसार लगभग हर तरह की महँगी दवाइयाँ और क्रीम का उपयोग किया, लेकिन मुहाँसे खत्म नहीं हुए। गोलू बताते हैं कि पिछले एक माह से लगातार गोबर का लेप लगाने के बाद मुहाँसे अब लगभग समाप्त हो गए हैं।

गोलू के लिए वरदान साबित हुआ यह नुस्खा उसे ाहर के नज़दीक गाँव सोनावार से मिला। दरअसल सोनावार निवासी 17

वर्षीय रिते ा सोनी भी मुहाँसों से पीड़ित थे। उन्हें असम से आई श्रीमती सु ाीला देवी बोथरा ने यह नुस्खा बताया था। उसके बाद से वे गोमाता की ारण में जा बैठे, अब वे अपने यार दोस्तों को 'गोमूत्र और गोबर का लेप बनाकर' मुफ्त दे रहे हैं।

इस प्राकृतिक लेप का उपयोग करने वालों का दावा है कि इससे ारीर पर होने वाले किसी भी तरह के दाग-धब्बे मिटाए जा सकते हैं। मुहाँसों के बारे में चर्म रोग वि ोषज्ञ डॉ. देवेन्द्र खरे कहते हैं कि कि ाोर और युवावस्था में ारीर में हारमोन अधिक बनता है जिससे यह बीमारी होती है।

कैसे बनता है लेप

आसानी से उपलब्ध सामग्री से लेप बनाना भी आसान है। आव यकता के अनुसार गाय का गोबर और ताज़ा गोमूत्र सूती कपड़े से ग्यारह बार छानते हैं, इसमें कड़वी नीम की पत्ती का अर्क मिलाने के बाद लेप तैयार हो जाता है। चेहरे पर इसका उपयोग कपास (रुई) से किया जाता है।

दैनिक भास्कर से साभार

दूसरों के दोष मत देखो

-कुंवर भुवनेन्द्रसिंह (पूर्व प्राचार्य)

महाकवि ोख़सादी एक दिन सुबह अपने बेटे के साथ मस्ज़िद में नमाज़ पढ़कर लौट रहे थे कि तभी उनके बेटे की निग़ाह ऐसे बहुत-से लोगों पर पड़ी जो अब भी अपने-अपने घरों में सोए हुए थे। यह देखकर बेटे से रहा नहीं गया। उसने अपने पिता से कहा- "अब्बा! देखिए न, ये लोग कितने आलसी और पापी हैं जो अभी तक सो रहे हैं तथा मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ने नहीं गए।"

ोख़सादी ने यह सुनकर दुःख भरे स्वर में कहा-"दूसरों की बुराई करने से तो यह अच्छा था कि तू भी अब तक सोता रहता और मेरे साथ मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ने न जाता।"

"यह आप कैसी बातें कर रहे हैं अब्बा?" बेटे ने बड़े आ चर्य

से पूछा।
इस पर ोखसादी ने बड़ी ही गम्भीर मुद्रा में कहा – "तब कम से कम तू दूसरों की बुराई से तो बचा रहता और अपनी जुबान गन्दी न करता। बेटे! दूसरों का दोष देखने से तो अच्छा है कि पहले अपने दोष देखे जायें।"
यह सुनकर बेटे के ज्ञानचक्षु खुल गए। इसके बाद से उसने कभी भी किसी की निन्दा नहीं की।

कालाकांकर,प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

ऋषि दयानन्द का क्षमा–बल

फर्रुखाबाद में ऋषि दयानन्द को सत्य–अहिंसा के तेजस्वी प्रयोग करने के अनेक अवसर मिले। उनके भ्रमण–मार्ग में एक दुर्जन आ खड़ा हुआ और स्वामी जी पर गालियों की वर्षा आरम्भ कर दी। साथ–साथ यह भी कहा– "तू तो ईसाइयों का नौकर है, हमें ईसाई बनाना चाहता है।" स्वामीजी मौन रहकर मुस्कराते हुए सब सुनते रहे। नित्य नियम के अनुसार अपना भ्रमण समाप्त कर अपने निवास स्थान पर लौट आए। परन्तु उस भूले–भटके मनुष्य ने फिर भी स्वामीजी का पीछा नहीं छोड़ा। वह सताने के लिए तो तुला ही था, इसीलिए स्वामीजी के डेरे पर भी आ पहुँचा। स्वामीजी ने उसका स्वागत–सत्कार करते हुए कहा– "आइये बैठिए, आने का कैसे कष्ट किया?" इस प्रकार स्वामीजी का प्रेमलाप करना था कि सताने की इच्छा से आया हुआ वह व्यक्ति एकदम बदल गया और उसका दिल मोम की तरह पिघलकर द्रवीभूत हो गया। उसके दोनों नेत्रों से अश्रु–ध ारा बहने लगी और वह क्षमा–याचना के लिए स्वामीजी के चरणों में लोटने लगा। स्वामीजी ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा– "प्यारे! ाब्द आका ा में उत्पन्न होकर वहीं लीन हो जाते हैं, इसलिए तुम्हारे वे कटु वचन भी वहीं लीन हो गये। वे मेरे पास नहीं हैं। उन्होंने मुझे स्प ा तक नहीं किया। इसी कारण उनसे मुझे कुछ भी दुःख नहीं हुआ।" इस घटना से उसका जीवन ही पलट गया और वह सत्य अहिंसा का खोजी बन गया।

Puncture your Ego

-Rajan Suri

Having conquered half the world and having ruined hundreds of towns and cities in his ego-driven quest, King Alexander reached India and found himself lost in a vast desert. With no water in sight for days, his thirst became unbearable.

He came across an old beggar who had a pot of drinking water with him. Alexander asked for water, but the later asked, "What will you give me in lieu of this pot of water?" Alexander, who had not seen a drop of water for almost a week, offered half of his kingdom. The beggar said, "Come tomorrow, as I want not half but your entire kingdom."

Alexander agreed to trade his entire kingdom for the pot of water. The beggar laughed and said, "So the worth of your kingdom is just a pot of water. Alexander realised his mistake and went back, but died on his way.

There is a story of a disciple who went to a Guru to learn martial arts. After sustained practice, the disciple became an invincible sword fighter. "Why should I now bow before the Guru, whom I can easily defeat in sword fight?" The impudent disciple challenged his Guru for a sword fight. The Guru accepted the challenge.

One day the disciple learnt that the Guru was getting an eight-feet-long sword made for the dual so that he could attack the disciple from a safe distance. In response, the disciple arranged a 10-feet-long sword. However, the disciple did not know that the eight-feet sheath of the Guru contained only a one-foot-long sharp sword.

On the appointed day, as the dual started, the disciple scrambled to take out his sword out of the shealth. The Guru quickly brought out his sword and placed it on the disciple's neck, who now pleaded for mercy.

The Guru forgave his disciple and said, "Always keep a small sword in your big sheath if you want to win".

In other words, even when you occupy high posts, or acquire exceptional capabilities, your ego should always be small.

Cinnamon and Honey-II

HONEY AND CINNAMON, EVERY DAY AND LEAVE ALL THE FOLLOWING AILMENTS

BLADDER INFECTIONS:

Take two tablespoons of cinnamon powder and one teaspoon of honey in a glass of lukewarm water and drink it. It destroys the germs in the bladder..

CHOLESTEROL:

Two tablespoons of honey and three teaspoons of cinnamon powder mixed in 16 ounces of tea water, given to a cholesterol patient, was found to reduce the level of cholesterol in the blood by 10 percent within two hours if taken three times a day, any chronic cholesterol is cured. Pure honey taken with food daily relieves complaints of cholesterol.

COLDS:

Those suffering from common or severe colds should take one tablespoon lukewarm honey with 1/4 spoon cinnamon powder daily for three days. This process will cure most chronic cough, cold, and clear the sinuses.

UPSET STOMACH:

Honey taken with cinnamon powder cures stomach ache and also clears stomach ulcers from the root.

GAS:

According to the studies done in India and Japan , it is revealed that if honey is taken with cinnamon powder the stomach is relieved of gas.

IMMUNE SYSTEM:

Daily use of honey and cinnamon powder strengthens the immune system and protects the body from bacteria and viral attacks. Scientists have found that honey has various vitamins and iron in large amounts. Constant use of Honey strengthens the white blood corpuscles to fight bacterial and viral diseases.

INDIGESTION:

Cinnamon powder sprinkled on two tablespoons of honey taken before food relieves acidity and digests the heaviest of meals.

INFLUENZA:

A scientist in Spain has proved that honey contains a natural ' Ingredient' which kills the influenza germs and saves the patient from flu.

LONGEVITY:

Tea made with honey and cinnamon powder, when taken regularly, arrests the ravages of old age. Take four spoons of honey, one spoon of cinnamon powder, and three cups of water and boil to make like tea. Drink 1/4 cup, three to four times a day. It keeps the skin fresh and soft and arrests old age. Life spans also increase and even a 100 year old, starts performing the chores of a 20-year-old..

PIMPLES:

Three tablespoons of honey and one teaspoon of cinnamon powder paste. Apply this paste on the pimples before sleeping and wash it next morning with warm water. If done daily for two weeks, it removes pimples from the root.

SKIN INFECTIONS:

Applying honey and cinnamon powder in equal parts on the affected parts cures eczema, ringworm and all types of skin infections.

WEIGHT LOSS:

Daily in the morning half an hour before breakfast on an empty stomach, and at night before sleeping, drink honey and cinnamon powder boiled in one cup of water. If taken regularly, it reduces the weight of even the most obese person. Also, drinking this mixture regularly does not allow the fat to accumulate in the body even though the person may eat a high calorie diet.

CANCER:

Recent research in Japan and Australia has revealed that advanced cancer of the stomach and bones have been cured successfully. Patients suffering from these kinds of cancer should daily take one tablespoon of honey with one teaspoon of cinnamon powder for one month three times a day.

FATIGUE:

Recent studies have shown that the sugar content of honey is more helpful rather than being detrimental to the strength of the body. Senior citizens, who take honey and cinnamon powder in equal parts, are more alert and flexible. Dr. Milton, who has done research, says that a half tablespoon of honey taken in a glass of water and sprinkled with cinnamon powder, taken daily after brushing and in the afternoon at about 3:00 P.M. when the vitality of the body starts to decrease, increases the vitality of the body within a week.

BAD BREATH:

People of South America do first thing in the morning, gargle with one teaspoon of honey and cinnamon powder mixed in hot water, so their breath stays fresh throughout the day.

HEARING LOSS:

Daily morning and night honey and cinnamon powder, taken in equal parts restores hearing. Remember when we were kids? We had toast with real butter and cinnamon sprinkled on it!

BROCCOLI THE RAM BAAN

Broccoli is the panacea of all ills. Taking recourse to Hindi, one may say it is a Ram Baan or Lord Rama's arrow that would demolish demons of all sorts including Ravana.

Cancer is one of the biggest bug bears of the present age. If a human being suspects that a cancerous growth on his body is manifesting, he must start eating broccoli in one form or the other. The tangible results will be visible within a month. The growth of tumour is halted well in time and broccoli ensures that it is rooted out. Broccoli cheers you up when you are struggling with a bout of depression. Consuming broccoli in any way will buttress your body and make your mind cheerful and spirit will go soaring high in the sky like a blithe spirit. You will be saying time and again "Three cheers to the friendly Broccoli".

Date of Pubn. : 30.04.2014 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 May.2014
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

प्र तद्वोचेदमतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम निभतं गुहा सत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत्।।
(यजु. 32/9)

ऋषि–स्वयंभु ब्रह्म, देवता–विद्वान्, छन्द–त्रिष्टुप्

अर्थ– हे वेदवाणी को धारण करने वाले, ज्ञानी, अमत अर्थात् मरण आदि दोष रहित, मुक्तों के धाम, सबको धारण और पोषण करने वाले और सब बुद्धियों के साक्षी ब्रह्म हैं। ऐसे आपके उपदे ा को जो विद्वान् जानता है वह "गन्धर्व' कहलाता है। जो परमात्मा के तीन पदों– जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने के सामर्थ्य को जानता है, वह पिता का भी पिता है और विद्वानों का भी विद्वान् हैं, ऐसे परमे वर की हम स्तुति करें।

Oh God Almightly, Your nature, attributes and deeds form the subject-matter of the Vedas. You alone are Immortal in this world and as such are Abode of all emancipated souls. You are Immanent even in the cavity of the heart of all creatures. You, both by practice and precept upholding You in his heart as well as in actions, is deservedly called Gandharva. Oh God, there are three spheres of dispensation, namely the creation, sustenance and dissolution of the Whole universe You deserve to be respected by all as a Father is respected by children.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58